इकाई 8 विसर्ग सन्धि

इकाई का रूपरेखा

8.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- विसर्गसन्धि के **विसर्जनीयस्य सः**(8.3.34) सूत्र से लेकर **सोऽचि लोपे चेत्पादपूरणम्**(6.1.134) तक के सूत्रों के सूत्रार्थ एवं उदाहरणादि से परिचित हो सकेंगे।
- विसर्गसन्धि के अन्तर्गत विसर्ग के स्थान पर होने वाले परिवर्तनों के स्थलों में सन्धि एवं सन्धिविच्छेद करना तथा उसकी प्रक्रिया को जान सकेंगे।
- विसर्ग को सत्व, सकार को रुत्व, रेफ को उत्व एवं यकारादेश, रेफ का लोप, सु का लोप एवं छन्द में पादपूर्ति के लिए होने वाले सु के लोप आदि से परिचित हो सकेंगे।
- त्रिपादिस्थ सूत्रों के उत्तरोत्तर असिद्धत्व के कारण उनके पूर्वापर प्रवृत्ति को भी समझ सकेंगे।

8.1 प्रस्तावना

इस इकाई से पूर्व आपने अच् एवं हल् सन्धि का अध्ययन किया है। इस इकाई में हम अच् अथवा हल् परे रहते विसर्ग के स्थान पर होने वाले परिवर्तनों को जानेंगे। इकाई के प्रारम्भ में विसर्ग के स्थान पर होने वाले नित्य एवं वैकल्पिक सकार के स्थलों से परिचित होंगे। तत्पश्चात् सकार को रुत्व वाले स्थलों से परिचित होंगे। सामान्यतः सकार को रुत्व एवं रु में शेष रेफ को विसर्ग होता है। परन्तु विशेष परिस्थितियों में उस रेफ के स्थान में उकार आदेश होने के पश्चात् गुण आदि कार्य होते हैं। रेफ के स्थान पर यकार आदेश एवं उस यकार का विकल्प से लोप आदि कार्य भी इस इकाई के अन्तर्गत है। इस इकाई के अन्तर्गत हम रेफ से रेफ परे होने पर रेफ का लोप होने से बनने वाले रूपों का अध्ययन करेंगे। रेफ लोप एवं उसके निमित्त रेफ के परे होने पर पूर्व वर्ण को होने वाले दीर्घ का भी अध्ययन करेंगे। इस इकाई में ही हम एतद्

एवं तद् से परे सु के लोप सम्बन्धी स्थलों का भी भलीभाँति अध्ययन करेंगे। इकाई के अन्त में छन्दों में पादों की पूर्ति के लिए सु के स्थान पर विसर्ग ना होकर उसके लोप विधान आदि का भी ज्ञान प्राप्त करेंगे।

8.2 विसर्ग सन्धि –विसर्जनीयस्य सः सूत्र से सोऽचि लोपे चेत्पादपूरणम् सूत्र पर्यन्त।

सूत्र – विसर्जनीयस्य सः(8.3.34)

वृत्ति – खरि विसर्जनीयस्य सः स्यात्।

सूत्रार्थ – खर् परे रहते विसर्ग के स्थान पर सकार आदेश होता है।

उदाहरण – विष्णुस्त्राता।

व्याख्या – यह सकारविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। 'विसर्जनीयस्य' षष्ठी एकवचन तथा 'सः' यह प्रथमा एकवचन का पद है। पदान्त सकार को सर्वप्रथम रुत्व होता है, तत्पश्चात् रेफ को **खरवसानयोर्विसर्जनीयः** सूत्र से अवसान तथा खर् परे रहते विसर्ग होता है, खर् परे रहते प्रस्तुत सूत्र से पुनः सकार हो जाता है। परन्तु पुनः सकार को रुत्व प्राप्त नहीं होता है, क्योंकि रुत्वविधि की अपेक्षा सत्वविधि असिद्ध है। अतः उसे सकार दिखाई ही नहीं देता है।

रूपसिद्धि –

विष्णुस्त्राता – विष्णुः+त्राता इस स्थिति में खर् त्राता घटक आदि तकार के परे रहते विष्णुः पद के अन्तिम विसर्ग के स्थान पर **विसर्जनीयस्य सः** इस सूत्र से सकार हुआ। विष्णुस्+त्राता इस स्थिति में वर्णसम्मेलन होकर विष्णुस्त्राता रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – वा शरि(8.3.36)

वृत्ति – शरि विसर्गस्य विसर्गो वा।

सूत्रार्थ – शर् परे रहते विसर्ग के स्थान पर विकल्प से विसर्ग होता है।

उदाहरण – हरिः शेते, हरिश्शेते।

व्याख्या – यह विसर्गविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। 'वा' अव्यय पद और 'शरि' यह सप्तमी एकवचन का पद है। पूर्वसूत्र से खर् परे रहते विसर्ग को सकार हो रहा था। जिसका अपवाद यह सूत्र शर् (श्,ष्,स्) के परे होने पर विकल्प से विसर्ग के स्थान पर विसर्ग करता है। जिसके फलस्वरूप एक विसर्ग युक्त रूप तथा दूसरा सकार युक्त रूप बनेगा।

रूपसिद्धि –

हरिः शेते, हरिश्शेते – हरिः+शेते इस स्थिति में खर् शेते घटक शकार के परे रहते विसर्ग के स्थान पर **विसर्जनीयस्य सः** इस सूत्र से नित्य सकार प्राप्त है, जिसे बाधकर **वा शरि** इस सूत्र से शेते घटक आदि शकार रूपी शर् के परे रहते विसर्ग के स्थान पर विकल्प से विसर्ग होकर हरिः शेते रूप सिद्ध हुआ। जिस पक्ष में विसर्ग के स्थान पर विसर्ग नहीं होता, उस पक्ष में सकार हो जाता है। हरिस्+शेते इस स्थिति

में **स्तोः श्चुना श्चुः** इस सूत्र से तालव्य शकार के साथ योग होने के कारण दन्त सकार के स्थान में भी श्चुत्व तालव्य सकार हुआ। हरिश्+शेते इस स्थिति में वर्णसम्मेलन होकर हरिश्शेते रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – ससजुषो रुः(8.2.66)

वृत्ति – पदान्तस्य सस्य सजुषश्च रुः स्यात्।

सूत्रार्थ – पदान्त में विद्यमान जो सकार तथा सजुष् सम्बन्धी अन्त्य षकार के स्थान पर रु आदेश होता है।

व्याख्या – यह रुविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। 'ससजुषोः' षष्ठी द्विवचन और 'रुः' यह प्रथमा एकवचन का पद है। इस सूत्र में भी ससजुषोः इस षष्ठ्यन्त को निर्देश करके रु कार्य किया जा रहा है, अतः **अलोऽन्त्यस्य** इस परिभाषा सूत्र की प्रवृत्ति होकर अन्त्य के स्थान पर विधान होगा। इस सूत्र द्वारा आदेशित रु में उकार अनुनासिक होने के कारण इत्संज्ञक है। अतः उसका लोप होकर र् शेष बचता है। र् का भी **खरवसानयोर्विसर्जनीयः** सूत्र से अवसान अथवा खर् परे रहते विसर्ग हो जाता है एवं क्, ख् और प्, फ परे होने पर क्रमशः जिह्वामूलीय तथा उपध्मानीय होता है।

सूत्र – अतो रोरप्लुतादप्लुते(6.1.113)

वृत्ति – अप्लुतादतः परस्य रोरुः स्यादप्लुतेऽति।

सूत्रार्थ – अप्लुत ह्रस्व अ से परे रु के स्थान में उ आदेश होता है, अप्लुत ह्रस्व अ परे रहते।

उदाहरण – शिवोऽर्च्यः।

व्याख्या – यह उकारविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में चार पद हैं। 'अतः' पंचमी एकवचन, 'रोः' षष्ठी एकवचन, 'अप्लुतात्' पंचमी एकवचन और 'अप्लुते' यह सप्तमी एकवचन का पद है। उत् एवं अति इन दो पदों की अनुवृत्ति आती है। रु के स्थान पर आदेश होने से अभिप्राय है रु सम्बन्धी रेफ के स्थान पर आदेश होना।

रूपसिद्धि –

शिवोऽर्च्यः – शिवस्+अर्च्य इस स्थिति में **ससजुषो रुः** सूत्र से पदान्त में विद्यमान सकार के स्थान पर रु आदेश हुआ। शिव+रु+अर्च्य इस स्थिति में रेफोत्तरवर्ती उकार की इत्संज्ञा होने के कारण लोप हुआ। शिव+र्+अर्च्य इस स्थिति में अप्लुत ह्रस्व अ (शिव घटक वकारोत्तरवर्ती अकार) से परे रु सम्बन्धी रेफ के स्थान पर आगे अर्च्य घटक अकार रूपी अप्लुत ह्रस्व अ के परे रहते **अतो रोरप्लुतादप्लुते** इस सूत्र से उकार हुआ। शिव+उ+अर्च्य इस स्थिति में **आद्गुणः** से शिव घटक अकार एवं आदेशित उकार के स्थान पर गुणरूप एकादेश ओ हुआ। शिवो+अर्च्य इस स्थिति में **एङः पदान्तादति** से पदान्त एङ् (शिवो घटक ओकार) से परे अर्च्य घटक ह्रस्व अ होने के कारण पूर्वपर के स्थान पर पूर्वरूप एकादेश हुआ। शिवो+ऽर्च्य इस स्थिति में वर्णसम्मेलन तथा स्वादिकार्य होकर शिवोऽर्च्यः रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – हशि च(6.1.114)

वृत्ति – तथा।

सूत्रार्थ – हश् परे रहते अप्लुत अत् से परे रु के स्थान पर उत् आदेश होता है।

उदाहरण – शिवो वन्द्यः।

व्याख्या – यह उत्वविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। 'हशि' सप्तमी एकवचन तथा 'च' यह अव्यय पद है। अप्लुतात्, अतः, रो और उत् इन पदों की अनुवृत्ति आती है। हश् प्रत्याहार के अन्तर्गत वर्ग के तृतीय, चतुर्थ एवं पञ्चम वर्ण तथा अन्तस्थ वर्ण एवं हकार आते हैं।

रूपसिद्धि –

शिवो वन्द्यः – शिवस्+वन्द्य इस स्थिति में पदान्त सकार को **ससजुषो रुः** सूत्र से रुत्व हुआ। शिव+रु+वन्द्य इस स्थिति में रेफोत्तरवर्ती उकार की इत्संज्ञा व लोप होकर शिव+र्+वन्द्य इस स्थिति में हश् (वन्द्य घटक वकार) के परे रहते अप्लुत ह्रस्व अकार (शिव घटक वकारोत्तरवर्ती अकार) से परे र् के स्थान में **हशि च** सूत्र से उकार आदेश हुआ। शिव+उ+वन्द्य इस स्थिति में शिव घटक वकारोत्तरवर्ती अकार से परे अच् (उकार) होने के कारण **आद्गुणः** से पूर्वपर के स्थान पर गुणरूप एकादेश ओकार हुआ। शिव्+ओ+वन्द्य इस स्थिति में वर्णसम्मेलन तथा स्वादिकार्य होकर शिवो वन्द्यः रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – भोभगोअघोअपूर्वस्य योऽशि(8.3.17)

वृत्ति – एतत्पूर्वस्य रोर्यादेशोऽशि। देवा इह, देवायिह। भोस् भगोस् अघोस् इति सान्ता निपाताः।

सूत्रार्थ – अश् परे रहते भो, भगो, अघो तथा अपूर्वक रु के स्थान पर यकार (य्) आदेश होता है।

उदाहरण – देवा इह, देवायिह।

व्याख्या – यह यकारविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं। भो भगो अघो अपूर्वस्य षष्ठी एकवचन, यः प्रथमा एकवचन और अशि यह सप्तमी एकवचन का पद है। रोः इस पद की अनुवृत्ति आती है। अश् प्रत्याहार के अन्तर्गत सभी स्वर वर्ण, वर्गों के तृतीय, चतुर्थ, पंचम वर्ण एवं ह्, य्, व्, र् और ल् ये वर्ण आते हैं। भो, भगो और अघो ये सब सान्त निपात हैं। चादिगण में इनका पाठ होने के कारण **चादयोऽसत्वे** सूत्र से इनकी निपातसंज्ञा हुई है। निपातसंज्ञक होने के कारण **स्वरादि निपातमव्ययम्** सूत्र से ये अव्ययसंज्ञक भी होते हैं।

रूपसिद्धि –

देवा इह, देवायिह – देवास्+इह इस स्थिति में देवास् घटक पदान्त सकार के स्थान पर **ससजुषो रुः** सूत्र से रु आदेश हुआ। देवा+रु+इह इस स्थिति में रेफोत्तरवर्ती उकार की इत्संज्ञा व लोप होकर देवा+र्+इह इस स्थिति में देवा घटक

वकारोत्तरवर्ती अकार के पूर्व में र् होने के कारण उसके स्थान पर **भो भगो अघो अपूर्वस्य योऽशि** सूत्र से अश् (इह घटक इकार) के परे रहते य् आदेश हुआ। देवा+य्+इह इस स्थिति में इह घटक इकार रूपी अश् परे रहते देवा घटक वकारोत्तरवर्ती आकार रूपी अवर्ण से परे यकार का **लोपः शाकल्यस्य** सूत्र से विकल्प से लोप होकर देवा इह रूप सिद्ध हुआ।

जिस पक्ष में **लोपः शाकल्यस्य** से लोप नहीं होता है, उस पक्ष में वर्णसम्मलेन होकर देवायिह रूप बनता है।

सूत्र – हलि सर्वेषाम्(8.3.22)

वृत्ति – भोभगोअघोअपूर्वस्य यस्य लोपः स्याद् हलि।

सूत्रार्थ – हल् परे रहते भो, भगो, अघो और अपूर्वक यकार का लोप होता है।

उदाहरण – भो देवाः। भगो नमस्ते। अघो याहि।

व्याख्या – यह यकारलोपविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। 'हलि' सप्तमी एकवचन और 'सर्वेषाम्' यह षष्ठी बहुवचन का पद है। यह सूत्र यकार का नित्य लोप करता है। सूत्र में सर्वेषाम् का अभिप्राय है–सभी आचार्यों के अनुसार। क्योंकि अश् परे रहते अवर्णपूर्वक यकार का लोप केवल शाकल्य आचार्य के मत में होता है, अतः यहाँ पर सर्वेषाम् पद स्पष्टता के लिए है।

रूपसिद्धि –

भो देवाः – भोस्+देवाः इस स्थिति में पदान्त सकार के स्थान में **ससजुषो रुः** सूत्र से रु आदेश हुआ। भो+रु+देवाः इस स्थिति में रेफोत्तरवर्ती उकार की इत्संज्ञा व लोप होकर भो+र्+देवाः इस स्थिति में देवा घटक आदि दकार रूपी अश् के परे रहते भो पूर्वक रेफ के स्थान पर **भो भगो अघो अपूर्वस्य योऽशि** सूत्र से यकार आदेश हुआ। भो+य्+देवाः इस स्थिति में देवा घटक आदि दकार रूपी हल् के परे रहते भो पूर्वक यकार का **हलि सर्वेषाम्** सूत्र से लोप होकर भो देवाः रूप सिद्ध हुआ।

भगो नमस्ते – भगोस्+नमस्ते इस स्थिति में पदान्त सकार के स्थान में **ससजुषो रुः** सूत्र से रु आदेश हुआ। भगो+रु+नमस्ते इस स्थिति में रेफोत्तरवर्ती उकार की इत्संज्ञा व लोप होकर भगो+र्+नमस्ते इस स्थिति में नमस्ते घटक आदि नकार रूपी अश् के परे रहते भगो पूर्वक रेफ के स्थान पर **भो भगो अघो अपूर्वस्य योऽशि** सूत्र से यकार आदेश हुआ। भगो+य्+नमस्ते इस स्थिति में नमस्ते घटक आदि नकार रूपी हल् के परे रहते भगो पूर्वक यकार का **हलि सर्वेषाम्** सूत्र से लोप होकर भगो नमस्ते रूप सिद्ध हुआ।

अघो याहि – अघोस्+याहि इस स्थिति में पदान्त सकार के स्थान में **ससजुषो रुः** सूत्र से रु आदेश हुआ। अघो+रु+याहि इस स्थिति में रेफोत्तरवर्ती उकार की इत्संज्ञा व लोप होकर अघो+र्+याहि इस स्थिति में याहि घटक आदि यकार रूपी अश् के परे रहते अघो पूर्वक रेफ के स्थान पर **भो भगो अघो अपूर्वस्य योऽशि** सूत्र से यकार आदेश हुआ। अघो+य्+याहि इस स्थिति में याहि घटक आदि यकार रूपी हल् के परे

रहते अघो पूर्वक यकार का **हलि सर्वेषाम्** सूत्र से लोप होकर अघो याहि रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – रोऽसुपि(8.3.69)

वृत्ति – अह्नो रेफादेशो न तु सुपि।

सूत्रार्थ – सुप् परे न हो तो अहन् शब्द के अन्त्य नकार के स्थान पर रेफ (र्) आदेश होता है।

उदाहरण – अहरहः। अहर्गणः।

व्याख्या – यह रुत्वविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। 'रः' प्रथमा एकवचन और 'असुपि' यह सप्तमी एकवचन का पद है। अहन् इस पद की अनुवृत्ति आती है। असुपि इस पद का भी अभिप्राय है सुप् प्रत्यय परे न हो तो। सुप् प्रत्यय के अन्तर्गत सु, औ, जस् आदि 21 प्रत्यय आते हैं।

रूपसिद्धि –

अहरहः – अहन्+अहन् इस स्थिति में **रोऽसुपि** सूत्र से सुप् प्रत्यय परे न होने के कारण अहन् के नकार के स्थान पर रेफ (र्) आदेश हुआ। यह रेफादेश दोनों अहन् शब्द के अन्त्य नकार के स्थान पर होता है। अहर्+अहर् इस स्थिति में **खरवसानयोर्विसर्जनीयः** सूत्र से द्वितीय अहर् के अन्त्य रेफ को विसर्ग होकर अहरहः रूप सिद्ध हुआ।

अहर्गणः – अहन्+गण इस स्थिति में सुप् परे न होने के कारण **रोऽसुपि** सूत्र से अहन् शब्द के अन्तिम नकार के स्थान पर रेफ (र्) आदेश हुआ। अहर्+गण इस स्थिति में वर्णसम्मेलन तथा स्वादिकार्य होकर अहर्गणः रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – रो रि(8.3.14)

वृत्ति – रेफस्य रेफे परे लोपः।

सूत्रार्थ – रेफ परे रहे तो रेफ का लोप होता है।

व्याख्या – यह लोपविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। 'रः' षष्ठी एकवचन और 'रि' यह सप्तमी एकवचन का पद है। लोपः इस पद की अनुवृत्ति आती है।

सूत्र – ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः(6.3.111)

वृत्ति – ढरेफयोर्लोपनिमित्तयोः पूर्वस्याणो दीर्घः। अणः किम्? तृढः। वृढः।

सूत्रार्थ – ढकार एवं रेफ के लोप में निमित्त जो ढकार एवं रेफ, यदि वो परे हो तो पूर्व अण् को दीर्घ होता है।

उदाहरण – पुना रमते। हरी रम्यः। शम्भू राजते।

व्याख्या – यह दीर्घविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में चार पद हैं। 'ढ्रलोपे' सप्तमी एकवचन, 'पूर्वस्य' षष्ठी एकवचन, 'दीर्घः' प्रथमा एकवचन और 'अणः' यह षष्ठी

एकवचन का पद है। अण् प्रत्याहार से यहाँ अ, इ और उ का ही ग्रहण होता है इस कारण तृढः और वृढः आदि पदों में दीर्घ नहीं होता है।

रूपसिद्धि –

पुना रमते – पुनर्+रमते इस स्थिति में पुनर् के अन्तिम रेफ से परे रमते घटक आदि रेफ है अतः **रो रि** सूत्र से पुनर् घटक अन्तिम रेफ का लोप हुआ। पुन+रमते इस स्थिति में रेफ के लोपनिमित्तक रमते घटक रेफ के परे रहते **ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः** सूत्र से पुन के नकारोत्तरवर्ती अकार को दीर्घ आकार होकर पुना रमते रूप सिद्ध हुआ।

हरी रम्यः – हरिर्+रम्यः इस स्थिति में रम्यः घटक रेफ के परे रहते हरिर् के अन्तिम रेफ का **रो रि** सूत्र से लोप हुआ। हरि+रम्यः इस स्थिति में रेफ के लोपनिमित्तक रम्यः घटक रेफ के परे रहते **ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः** सूत्र से हरि घटक रेफोत्तरवर्ती इकार को दीर्घ ईकार होकर हरी रम्यः रूप सिद्ध हुआ।

शम्भू राजते – शम्भुर्+राजते इस स्थति में राजते घटक आदि रेफ के परे रहते **रो रि** सूत्र से शम्भुर् के अन्तिम रेफ का लोप हुआ। शम्भु+राजते इस स्थिति में रेफ के लोपनिमित्तक राजते घटक आदि रेफ के परे रहते **ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः** सूत्र से शम्भु घटक भकारोत्तरवर्ती उकार को दीर्घ ऊकार होकर शम्भू राजते रूप सिद्ध हुआ।

मनस् रथ इत्यत्र रुत्वे कृते हशि चेत्युत्वे रोरीति लोपे च प्राप्ते।

अर्थात् – मनस्+रथः इस स्थिति में सकार को रेफ होकर मनर्+रथ यह स्थिति हुई। इस स्थिति **हशि च** से रेफ को उत्व और **रो रि** से रेफ का लोप एक साथ प्राप्त हुआ। इन दोनों में कौन सा कार्य हो? एतदर्थ अग्रिम सूत्र प्रवृत्त होता है।

सूत्र – विप्रतिषेधे परं कार्यम्(1.4.2)

वृत्ति – तुल्यबलविरोधे परं कार्यं स्यात्। इति लोपे प्राप्ते। पूर्वत्रासिद्धमिति रोरीत्यस्यासिद्धत्वादुत्वमेव।

सूत्रार्थ – तुल्य (समान) बल वालों का विरोध होने पर परकार्य (बाद वाला सूत्र) प्रवृत्त होता है।

उदाहरण – मनोरथः।

व्याख्या – यह नियमसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद है। 'विप्रतिषेधे' सप्तमी एकवचन तथा 'परम्' और 'कार्यम्' ये दोनों प्रथमा एकवचन के पद हैं। यहाँ तुल्यबल का अभिप्राय समान बल है। जब दो सूत्र अन्य स्थलों में जहाँ पर एक दूसरे की प्राप्ति नहीं हो, वहाँ पर चरितार्थ (अपना-अपना कार्य कर चुके) हों तो वे परस्पर तुल्यबल वाले माने जाते हैं। यदि इन तुल्यबल वालों का विरोध हो तो अष्टाध्यायी के क्रम में जो परवर्ती सूत्र होगा, उसकी ही प्रवृत्ति होती है, यथा–मनर्+रथः यहाँ पर **हशि च** और **रो रि** इन दो सूत्रों का तुल्यबलविरोध हो रहा है। क्योंकि **हशि च** शिवो वन्द्यः आदि स्थलों में चरितार्थ है जहाँ पर **रो रि** की प्राप्ति नहीं है एवं **रो रि** सूत्र पुना रमते आदि स्थलों में चरितार्थ है, जहाँ पर **हशि च** की प्राप्ति नहीं है। अतः ये दोनों

सूत्र तुल्यबल वाले हुए। अतः प्रस्तुत सूत्र **विप्रतिषेधे परं कार्यम्** यह नियम करता है कि तुल्यबलविरोध के स्थल में परकार्य हो। **रो रि** सूत्र अष्टाध्यायी में 8.3.14 पर एवं **हशि च** 6.1.11 पर पढा गया है। अतः परसूत्र होने से **रो रि** द्वारा विहित कार्य रेफलोप की प्राप्ति हुई। परन्तु **हशि च** यह सपादी एवं **रो रि** यह त्रिपादी सूत्र है। जिसके कारण **पूर्वत्रासिद्धम्** इस सूत्र से त्रिपादी रेफलोप कार्य के असिद्ध होने से सपादी उत्व कार्य ही होगा।

रूपसिद्धि –

मनोरथः – मनस्+रथ इस स्थिति में मनस् के अन्तिम पदान्त सकार के स्थान पर **ससजुषो रुः** सूत्र से रु आदेश हुआ। मन+रु+रथ इस स्थिति में रेफोत्तरवर्ती उकार की इत्संज्ञा एवं लोप होकर मन+र्+रथ इस स्थिति में रथ घटक आदि रेफ के परे होने के कारण रु आदेश हुए र् का **रो रि** से लोप प्राप्त हुआ। साथ ही **हशि च** से रथ घटक आदि रेफ रूपी हश् परे रहते अप्लुत ह्रस्व अकार (मनर् घटक नकारोत्तरवर्ती अकार) से परे रेफ के स्थान पर उकार आदेश प्राप्त हुआ। यहाँ रेफ का लोप हो अथवा उसके स्थान पर उकार हो इस प्रकार का तुल्यबल विरोध होने पर **विप्रतिषेधे परं कार्यम्** इस परिभाषासूत्र से परकार्य **रो रि** से लोपकार्य की प्राप्ति हुई। परन्तु **पूर्वत्रासिद्धम्** सूत्र की सहायता से सपादी कार्य उत्व के अपेक्षा त्रिपादी रेफ लोपकार्य के असिद्ध होने के कारण उत्व कार्य ही हुआ। मन+उ+रथ इस स्थिति में नकारोत्तरवर्ती अवर्ण से परे अच् (उकार) होने के कारण पूर्वपर के स्थान पर **आद् गुणः**से गुणरूप एकादेश ओकार हुआ। मन्+ओ+रथ इस स्थिति में वर्णसम्मेलन तथा स्वादिकार्य होकर मनोरथः रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि(6.1.132)

वृत्ति – अककारयोरेतत्तदोर्यः सुस्तस्य लोपो हलि न तु नञ्समासे। एष विष्णुः। स शम्भुः। अकोः किम् ? एषको रुद्रः। अनञ्समासे किम् ? असः शिवः। हलि किम् ? एषोऽत्र।

सूत्रार्थ – हल् परे रहते ककार रहित एतद् और तद् सम्बन्धी सु का लोप होता है, नञ्समास को छोड़कर।

उदाहरण – एष विष्णुः।स शम्भुः।

व्याख्या – यह लोपविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में पाँच पद हैं। 'एतत्तदोः' षष्ठी द्विवचन, 'सुलोपः' प्रथमा एकवचन, 'अकोः' षष्ठी द्विवचन एवं 'अनञ्समासे' और 'हलि' ये दोनों सप्तमी एकवचन के पद हैं। हल् प्रत्याहर के अन्तर्गत सभी व्यंजनवर्ण आते हैं। ककार रहित एतद् एवं तद् सम्बन्धी सु का ही लोप होता है ऐसा कहने से एषको रुद्रः इस प्रयोग में सु का लोप नहीं हुआ। नञ् समास को छोड़कर ही एतद् एवं तद् सम्बन्धी सु का लोप होता है ऐसा विधान करने से असः शिवः में सु का लोप नहीं होता है। हल् परे रहते ही एतद् एवं तद् सम्बन्धी सु का लोप होता है, सूत्र में ऐसा विधान करने से एषोऽत्र (एषः+अत्र) यहाँ पर सु का लोप नहीं होता है।

रूपसिद्धि –

एष विष्णुः – एषस्+विष्णुः इस स्थिति में एतद् सम्बन्धी पदान्त सकार के स्थान में **ससजुषो रुः**इस सूत्र से विसर्ग प्राप्त था, जिसे बाधकर हल् विष्णु घटक आदि वकार के परे रहते ककार रहित एतद् सम्बन्धी सु (स्) का **एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि** से लोप होकर एष विष्णुः रूप सिद्ध हुआ।

स शम्भुः – सस्+शम्भुः इस स्थिति में तद् सम्बन्धी सकार के स्थान पर रुत्व प्राप्त था, जिसे बाधकर **एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञसमासे हलि** से हल् शम्भु घटक आदि शकार के परे रहते तद् सम्बन्धी सु (स्) का लोप होकर स शम्भुः रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – सोऽचि लोपे चेत्पादपूरणम्(6.1.134)

वृत्ति – स इत्यस्य सोर्लोपः स्यादचि पादश्चेल्लोपे सत्येव पूर्य्येत।

सूत्रार्थ – यदि केवल लोप होने से छन्द का पाद पूर्ण हो रहा हो तो अच् परे रहते भी तद् सम्बन्धी सु का लोप होता है।

उदाहरण – सेमामविड्ढि प्रभृतिम्। सैष दाशरथी रामः।

व्याख्या – यह लोपविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में पाँच पद हैं। 'सः' यह सस् इस अनुकृत पद शब्द के लुप्त षष्ठी एकवचन का पद है, 'अचि' और 'लोपे' ये सप्तमी द्विवचन के, 'चेत्' यह अव्यय और 'पादपूरणम्' यह द्वितीया एकवचन का पद है। पूर्वसूत्र से तद् सम्बन्धी सु का हल् परे रहते लोप विधान था। यह सूत्र पादपूर्ति करने के लिंए अच् परे रहते तद् सम्बन्धी सु का लोप करता है। श्लोक आदि के विशेष भाग को छन्द शास्त्र में पाद कहते हैं। प्रायः छन्दों के प्रत्येक पाद में मात्राएँ/वर्ण नियत होते है। इस सूत्र से श्लोकों के पाद में तद् शब्द प्रथमा एकवचन में हो और उसके सु के कारण पादपूर्ति नहीं होने की स्थिति में अच् परे होने पर भी उस सु का लोप हो जाता है।

प्रस्तुत सूत्र से वहीं पर अच् परे रहते सु का लोप होता है, जहाँ छन्द में पादपर्ति के लिए कोई अन्य उपाय नहीं हों, यदि किसी अन्य उपाय से पादपूर्ति सम्भव हो तो यह लोपकार्य नहीं होता है।

रूपसिद्धि –

सेमामविड्ढि प्रभृतिम् –यह ऋग्वेद 2.44.1का मन्त्र है। यह मन्त्र निचृद् जगती छन्द में है। चार पादों के इस छन्द के प्रत्येक पाद में 12 अक्षर होते हैं। प्रस्तुत उदाहरण के प्रथम एवं द्वितीय पद सस्+इमाम् इस स्थिति में अच् परे होने के कारण अन्य सूत्रों से लोप की प्राप्ति नहीं थी, जिसके फलस्वरूप सकार को रुत्व एवं रेफ को यकार तथा उसका विकल्प से लोप हो कर स+इमाम् यह स्थिति होती। जिसके कारण जगती छन्द के प्रथम पाद में 12 के स्थान पर 13 मात्राएँ होने से छन्द में दोष होने लगता। प्रस्तुत सूत्र **सोऽचि लोपे चेत्पादपूरणम्**से ऐसी ही स्थिति में पाद की पूर्ति के लिए अच् परे होने पर भी तद् सम्बन्धी सु (स्) का लोप होता है। अतः सस्+इमाम् यहाँ पर स् का लोप हुआ। स+इमाम् इस स्थिति में सकारोत्तवर्ती अवर्ण से इमाम् घटक आदि इकार रूपी अच् के परे रहते पूर्वपर के स्थान पर गुणरूप एकादेश एकार हुआ।

स्+ए+माम् इस स्थिति में वर्णसम्मेलन करने से सेमाम् हुआ। इस स् लोप होने के कारण यहाँ पाद की पूर्ति होकर सेमामविड्ढि प्रभृतिम् रूप सिद्ध हुआ।

सैष दाशरथी रामः –यह अनुष्टप् छन्द का उदाहरण है। अनुष्टुप् छन्द में भी चार पाद होते है एवं प्रत्येक पाद में आठ–आठ अक्षर होते हैं। सस्+एष इस स्थिति में एष घटक अच् के परे रहते भी पादपूर्ति के लिए **सोऽचि लोपे चेत्पादपूरणम्**सूत्र से तद् सम्बन्धी सु (स्) का लोप हुआ। स+एष इस स्थिति में सकारोत्तरवर्ती अवर्ण से एच् एष घटक आदि एकार के परे रहते पूर्वपर के स्थान पर वृद्धिरूप एकादेश ऐकार हुआ। स्+ऐ+ष इस स्थिति में वर्णसम्मेलन होकर सैष बना। इस सलोप एवं वृद्धि होने के कारण पाद की पूर्ति हुई। यदि सकार का लोप नहीं होता तो स् को रुत्व एवं रेफ को यकार तथा यकार का विकल्प से लोप होकर स एष अथवा सयेष रूप बनता जिसके कारण इस श्लोक के प्रथम पाद में १२ के स्थान पर १३ मात्राएँ हो जाती। जिससे अनुष्टुप् छन्दभङ्ग हो जाता। इस कारण से ही प्रस्तुत सूत्र से सकार का लोप होकर सैष दाशरथी रामः प्रयोग सिद्ध हुआ।

बोध प्रश्न

1. समुचित विकल्प का चयन कीजिए–

i. हरिः शेते का वैकल्पिक रूप है–

(क) हरिर् शेते (ख) हरौ शेते (ग) हरिस्शेते (घ) हरिश्शेते

ii. **विसर्जनीयस्य सः** यह सूत्र है –

(क) संज्ञासूत्र (ख) विधिसूत्र (ग) परिभाषासूत्र (घ) अधिकारसूत्र

iii. रुत्वविधायक सूत्र है –

(क) विसर्जनीयस्य सः (ख) ससजुषो रुः (ग) रो रि (घ) हशि च

iv. शिवोऽर्च्यः का विच्छेद होता है –

(क) शिव+ऋचः (ख) शिवा+ऋच्यः (ग) शिवस्+आर्च्यः (घ) शिवस्+अर्च्यः

v. निम्नलिखित में से निपातसंज्ञक है –

(क) भोस् (ख) भगोस् (ग) अघोस् (घ) सभी

2. सत्य अथवा असत्य कथन हेतु क्रमशः सही (√) या गलत (×) का चिह्न लगाएं –

i. शिवोऽर्च्यः **हशि च** इस सूत्र का उदाहरण है– ( )

ii. हरिः शेते के दो रूप सम्भव हैं– ( )

iii. सुप् प्रत्याहार के अन्तर्गत 21 प्रत्यय आते हैं– ( )

iv. रेफ परे रहते रेफ का लोप नहीं होता है– ( )

v. तद् एतद् से परे सु का लोप सम्भव नहीं है– ( )

3. समुचित उत्तर द्वारा रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए –

i. शर् परे रहते विसर्ग को .... विसर्ग आदेश होता है।

ii. सजुष् के अन्तिम षकार के स्थान में .... होता है।

iii. **विप्रतिषेधे परं कार्यम्**........... सूत्र है।

iv. **रो रि** का उदाहरण .... है।

v. पादपूर्ति के लिए .... लोप होता है।

अभ्यास प्रश्न

1. **भोभगोअघोअपूर्वस्य योऽशि** सूत्रस्थ पदों की सङ्ख्या एवं विभक्तियाँ बताइए।
2. **विप्रतिषेधे परं कार्यम्** इस सूत्र की कार्यविधि को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
3. ढ्रलोप क्या है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
4. **सोऽचि लोपे चेत्पादपूरणम्** इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
5. हश् प्रत्याहार में कौन-कौन से वर्ण आते हैं? बताइए।

8.3 सारांश

इस इकाई के अध्ययन से आपने सन्धि के समस्त प्रकरणों का सम्यक् प्रकार से ज्ञान प्राप्त कर लिया। सन्धिप्रकरण की पाँच इकाईयों में से यह अन्तिम पाँचवीं इकाई है। इसके अन्तर्गत आप लघुसिद्धान्तकौमुदी के विसर्गसन्धि प्रकरण का अध्ययन किया। पिछली चौथी इकाई में भी आपने सामान्य रूप से जाना था कि पदान्त में दन्त सकार को रुत्व एवं उस रुत्व सम्बन्धी रेफ को अवसान एवं खर् परे हो तो विसर्ग हो जाता है। इस इकाई में हमने सर्वप्रथम विसर्ग के स्थान पर सकारादेश वाले स्थलों से परिचय प्राप्त किया। तत्पश्चात् विसर्ग के स्थानी रेफ के स्थान पर होने वाले आदेशों का ज्ञान प्राप्त किया। रेफ के लोप के उदाहरणों को भी जाना एवं उस रेफ लोप के निमित्त के परे होने पर पूर्ववर्ण को दीर्घ होकर बनने वाले रूपों का भी भली-भाँति अध्ययन किया। इस इकाई के अन्त में विसर्ग निमित्तक रेफ एवं रेफ निमित्तक सकार के लोप वाले स्थलों से भी परिचित हुए। भाषा में विसर्गसन्धि का बहुत महत्व है, क्योंकि जिन स्थलों में विसर्ग का लोप हुआ रहता है या फिर उत्वादि होकर गुण हुआ रहता है, इस सन्धि के ज्ञान के बिना आप संशय में पड़ जाते हैं।

8.4 शब्दावली

विप्रतिषेध – **अन्यत्रान्यत्रलब्धावकाशयोरेकत्रप्राप्तिस्तुल्यबलविरोधः** अर्थात् भिन्न–भिन्न स्थलों पर अपना–अपना कार्य कर चुके दो सूत्र यदि कहीं एक साथ कार्य करने हेतु प्रवृत्त (उपस्थित) हो जाएं तो उनमें परस्पर तुल्यबलविरोध माना जाता है। यदि इस प्रकार के तुल्यबलविरोध का प्रसङ्ग हो तो **विप्रतिषेधे परं कार्यम्** इस परिभाषासूत्र के द्वारा यह व्यवस्था की जाती है कि अष्टाध्यायी के क्रम में जो परवर्ती सूत्र होगा, उसकी ही प्रवृत्ति होगी।

सम्यक् – भली-भाँति।

8.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

वरदराजाचार्य, मूल लघुसिद्धान्तकौमुदी. गोरखपुर, गीताप्रेस.

वरदराजाचार्य, हिन्दी व्या॰ गोविन्दाचार्य. लघुसिद्धान्तकौमुदी. दिल्ली, चौखम्भा सुरभारती.

वरदराजाचार्य, हिन्दी व्या॰ शास्त्री, धरानन्द. लघुसिद्धान्तकौमुदी. दिल्ली, मोतीलाल बनारसी दास.

वरदराजाचार्य, हिन्दी व्या॰ शास्त्री, भीमसेन. लघुसिद्धान्तकौमुदी. (भाग–1–6), दिल्ली, भैमी प्रकाशन.

शास्त्री, चारुदेव. व्याकरण चन्द्रोदय. (भाग–1–3), दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास.

वरदराजाचार्य, सम्पा॰ एवं हिन्दी सिंह, सत्यपाल. लघुसिद्धान्तकौमुदी. दिल्ली, शिवालिक पब्लिकेशन.

Apte, V.S. ***The Students' Guide to Sanskrit Composition.*** Chowkhamba Sanskrit Series, Varanasi.

Kale, M.R. ***Higher Sanskrit Grammar*** **.**MLBD, Delhi.

Kanshi Ram, ***Laghusiddhantkaumudi***. (Vol. 1-3). MLBD. Delhi, 2009.

Ballantyne, James R. ***Laghusiddhantkaumudi***. Chowkhamba Sanskrit Series, Varanasi.

8.6 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न

1. i. (घ) हरिश्शेते, ii. (ख) विधिसूत्र, iii. (ख) ससजुषो रुः, iv. (घ) शिवस्+अर्च्यः, v. (घ) सभी।
2. i. असत्य, ii. सत्य, iii. सत्य, iv. असत्य, v. असत्य।
3. i. विकल्प से, ii. रु आदेश, iii. नियमसूत्र, iv. पुना रमते, v. सु का।

अभ्यास प्रश्न

इन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।